



Neutral Citation No. - 2026:AHC:64998-DB

उच्च न्यायालय इलाहाबाद

बी.एन.एस.एस. की धारा 413 के अंतर्गत आपराधिक अपील संख्या - 181/2026

भूरा साहू

.....अपीलार्थी

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य एवं 2 अन्य

.....प्रत्यर्थी

अपीलार्थी के अधिवक्ता: देवी दयाल

प्रत्यर्थी के अधिवक्ता: शासकीय अधिवक्ता

न्यायालय संख्या - 43

माननीय न्यायमूर्ति सलिल कुमार राय,

माननीय न्यायमूर्ति देवेन्द्र सिंह-I,

बी.एन.एस.एस. की धारा 413 के अंतर्गत वर्तमान अपील कथित रूप से मृत व्यक्ति के पिता द्वारा सत्र न्यायाधीश, हमीरपुर द्वारा सत्र विचारण संख्या 43/2019 (उत्तर प्रदेश राज्य बनाम अजय तिवारी एवं अन्य) में पारित निर्णय एवं आदेश दिनांक 04.02.2026 के विरुद्ध दायर की गई है, जिसमें अभियुक्त/विपक्षी संख्या 2 और 3 को मुकदमा अपराध संख्या 0482/2018, थाना सुमेरपुर, जनपद हमीरपुर से उत्पन्न धारा 302, 34, 201 भारतीय दण्ड संहिता के तहत दोषमुक्त कर दिया गया है।

वर्तमान अपील में विपक्षी संख्या 3 अपीलार्थी की पुत्रवधू और कथित रूप से मृत व्यक्ति की पत्नी है।

दिनांक 03.11.2018 का, एक आदित्य कुमार साहू द्वारा थाना प्रभारी, थाना सुमेरपुर को एक आवेदन प्रस्तुत किया गया था, जिसमें सूचित किया गया था कि देव नारायण साहू (इसके बाद 'मृतक' के रूप में संदर्भित) सुबह 9:00 बजे अपने घर के एक कमरे में मृत पाया गया था। शव छत से साड़ी के सहारे लटका हुआ पाया गया था और मृतक के पैर मुड़े हुए थे और चारपाई पर टिके थे। आवेदन को विचारण न्यायालय में प्रदर्शक-6 के रूप में अंकित किया गया था।

पंचायतनामा उसी तिथि को शाम 5:40 बजे उप-निरीक्षक नरेंद्र यादव द्वारा किया गया था। शव छत से लटका रहा और दिनांक 03.11.2018 के आवेदन में वर्णित स्थिति में शाम 5:40 बजे तक रहा, जब ऊपर बताए अनुसार पंचायतनामा किया गया था। पंचायतनामा के बाद, शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में उल्लेख किया गया कि गर्दन के दाईं ओर, दाहिने कान से 4 सेमी नीचे और ठुड्डी से 5 सेमी नीचे 8 सेमी x 2 सेमी का एक लिगेचर मार्क पाया गया। गर्दन में 22 सेमी का अंतर था। ग्लूव हल्का था और लिगेचर मार्क काटने पर इकीमोसिस मौजूद था। शव परीक्षा करने वाले डॉक्टर की राय थी कि मृत्यु गला घोटने के कारण होने वाले श्वासावरोध से हुई थी और मृत्यु शव परीक्षा से दो दिन पहले हुई थी।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



न्यायाधीश के समक्ष लंबित है। यह कहा गया है कि अपीलार्थी ने उपरोक्त मुकदमेबाजी के कारण पैदा हुई कड़वाहट और दुश्मनी की वजह से अभियुक्तों को फंसाया था।

अभियोजन पक्ष ने अपीलार्थी का पीडब्ल्यू-1 के रूप में और एक संतोष का, जिसने स्वयं को मृतक का मामा होने का दावा किया था, पीडब्ल्यू-2 के रूप में परीक्षण किया। शव परीक्षा करने वाले डॉक्टर का पीडब्ल्यू-3 के रूप में परीक्षण किया गया। प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखक का पीडब्ल्यू-4 के रूप में और 03.11.2018 को थाने पर तैनात उप-निरीक्षक का पीडब्ल्यू-5 के रूप में परीक्षण किया गया। 20.11.2018 को थाने पर तैनात उप-निरीक्षक का पीडब्ल्यू-6 के रूप में परीक्षण किया गया।

विचारण न्यायालय ने पीडब्ल्यू-1 और पीडब्ल्यू-2 की गवाही में बड़े विरोधाभासों को नोट करने के बाद अभियोजन के मामले को खारिज कर दिया और उपरोक्त गवाहों को अविश्वसनीय माना।

अभियोजन साक्ष्य की उल्लेखनीय विशेषताएं, जिन्होंने अभियुक्तों को दोषमुक्त करने के लिए विचारण न्यायालय को प्रभावित किया, वे इस प्रकार हैं: -

- प्रथम सूचना रिपोर्ट दिनांक 16.11.2018 को पंजीकृत की गई थी। घटना 02.11.2018 की रात को हुई थी और शव कथित तौर पर 03.11.2018 की सुबह पाया गया था। विचारण न्यायालय ने माना है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने में हुए विलंब का संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। अपीलार्थी, जो प्रथम सूचनाकर्ता है, का यह दावा कि वह 03.11.2018 को ही प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने गया था लेकिन संबंधित थाने पर तैनात पुलिस कर्मियों द्वारा इसे पंजीकृत नहीं किया गया था, विचारण न्यायालय द्वारा यह नोट करने के बाद स्वीकार नहीं किया गया है कि आदित्य कुमार साहू द्वारा दायर आवेदन दिनांक 03.11.2018, जिसे विचारण न्यायालय में प्रदर्श क-6 के रूप में अंकित किया गया है, में वे तथ्य शामिल नहीं हैं जो दिनांक 16.11.2018 के आवेदन में बताए गए हैं।
- दिनांक 03.11.2018 के आवेदन में अभियुक्तों को संदिग्ध के रूप में नामित नहीं किया गया है और आवेदन में उस नोकझांक के बारे में भी कोई विवरण नहीं है जो कथित तौर पर 02.11.2018 की रात को अपीलार्थी और राजेश के साथ आए अभियुक्तों के बीच हुई थी।
- अपनी गवाही में पीडब्ल्यू-1, अपीलार्थी ने कहा कि वह अपने बेटे के मृत पाए जाने के बाद 03.11.2018 को ही सुबह 10 बजे थाने गया था और प्रदर्श क-6 उसकी पहल पर एक आदित्य कुमार साहू द्वारा दाखिल किया गया था, लेकिन फिर भी, आवेदन में वे तथ्य शामिल नहीं हैं जो दिनांक 16.11.2018 की प्रथम सूचना रिपोर्ट में बताए गए हैं। विचारण न्यायालय ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया है कि उनकी गवाही में, प्रथम सूचना रिपोर्ट लेखक और मामले के विवेचक, जिनका अभियोजन साक्षी के रूप में परीक्षण किया गया था, ने इस बात से इनकार किया कि अपीलार्थी उनसे 03.11.2018 और 21.11.2018 के बीच मिला था।
- अपनी गवाही में, पीडब्ल्यू-2 ने कहा कि उसने अभियुक्त और अजय तिवारी को उस घर की ओर जाते देखा जहाँ मृतक मृत पाया गया था, जबकि गवाह अपीलार्थी के घर से लौट रहा था। विचारण न्यायालय ने पीडब्ल्यू-2 को एक 'चांस वितनेस' माना है और पीडब्ल्यू-2 मौके पर अपनी उपस्थिति सिद्ध नहीं कर सका।
- विचारण न्यायालय ने पीडब्ल्यू-2 और पीडब्ल्यू-1 के बयानों में विरोधाभासों पर भी ध्यान दिया है। अपनी गवाही में, पीडब्ल्यू-1 ने कहा कि वह मृतक के साथ 02.11.2018 की रात 10 बजे

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



अपने किराए के आवास से मृतक के घर की ओर लौट रहा था। दूसरी ओर, पीडब्ल्यू-2 ने अपनी जिरह में कहा है कि वह अपनी बहन, यानी मृतक की माँ के घर पर था और उसने अपीलार्थी और मृतक की माँ के साथ रात्रिभोज किया था। अपनी जिरह में, गवाह ने आगे कहा है कि उस समय मृतक अपीलार्थी के घर पर नहीं था। अपनी जिरह में, गवाह ने आगे कहा है कि वह रात 11:00 बजे तक अपीलार्थी के घर पर रहा। पीडब्ल्यू-2 का उपरोक्त बयान, स्पष्ट रूप से, पीडब्ल्यू-1 की गवाही का खंडन करता है कि मृतक ने 02.11.2018 की रात को अपने घर पर अपीलार्थी के साथ रात्रिभोज किया था और अभियुक्त एवं अपीलार्थी के बीच तब कहासुनी हुई थी जब अपीलार्थी मृतक के साथ था और मृतक अपीलार्थी के साथ रात्रिभोज करने के बाद अपने घर लौट रहा था। विचारण न्यायालय ने पीडब्ल्यू-2 को एक अविश्वसनीय गवाह भी माना है क्योंकि गवाह ने कई महत्वपूर्ण और प्रासंगिक प्रश्नों के उत्तर देने से परहेज किया। पीडब्ल्यू-2 ने खुद का मृतक का मामा होने का दावा किया लेकिन साथ ही सत्य नारायण को पहचानने में विफल रहा जो अपीलार्थी का दामाद था। विचारण न्यायालय के निर्णय से यह भी पता चलता है कि विपक्षी संख्या 3 के पिता द्वारा अपीलार्थी, मृतक की माँ, अपीलार्थी के दामाद और पीडब्ल्यू-2 के बेटे के विरुद्ध डकैती का एक मामला पंजीकृत किया गया था, जिसने अपने बेटे को जमानत पर रिहा कराया था।

- विचारण न्यायालय ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया है कि अपनी गवाही में, पीडब्ल्यू-2 ने कहा कि धारा 161 दण्ड प्रक्रिया संहिता के तहत उसका बयान घटना के चार से पांच दिन बाद विवेचक द्वारा दर्ज किया गया था, जबकि रिकॉर्ड से पता चलता है कि धारा 161 दण्ड प्रक्रिया संहिता के तहत गवाह का बयान 19.11.2018 को दर्ज किया गया था।
- विचारण न्यायालय ने पीडब्ल्यू-2 की गवाही में अन्य विसंगतियों और स्पष्ट मिथ्या बातों को भी नोट किया है जिससे यह माना जा सकता है कि गवाह विश्वसनीय नहीं था और अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए उस पर निर्भर नहीं रहा जा सकता था।
- अभियोजन पक्ष के मामले को खारिज करते समय, विचारण न्यायालय ने नोट किया कि अपीलार्थी की पहल पर पंजीकृत प्रथम सूचना रिपोर्ट में राजेश को अपीलार्थी और उसके बेटे, यानी मृतक को दी गई धमकी में एक सक्रिय भागीदार के रूप में नामित किया गया है। विवेचना के दौरान, विवेचक ने राजेश के कॉल डिटेल रिकॉर्ड के आधार पर पाया कि वह अपीलार्थी द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट में संदर्भित स्थान पर मौजूद नहीं था।
- अभियोजन पक्ष का यह स्वीकृत मामला है कि 03.11.2018 की सुबह शव छत से लटका हुआ पाया गया था। अभियोजन पक्ष का मामला है कि पंचायतनामा 03.11.2018 को शाम 5:40 बजे किया गया था। विचारण न्यायालय ने इसे असंभव पाया है कि शव लटका रहा होगा और परिवार के सदस्यों ने इतने लंबे समय तक उसे नीचे नहीं उतारा होगा। विचारण न्यायालय ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया है कि मृतक का मानसिक समस्याओं के लिए उपचार चल रहा था और साड़ी, यानी लटकाने के लिए इस्तेमाल किए गए कपड़े का कोई बरामदगी मेमो तैयार नहीं किया गया था।
- अभियोजन साक्ष्य में अन्य उल्लेखनीय विशेषता जिसे विचारण न्यायालय ने अभियोजन मामले को खारिज करते समय विचार किया है, वह यह है कि मृतक की माँ सहोदरा देवी के बारे में कहा गया था कि उन्होंने सबसे पहले मृतक का शव देखा था। अपनी गवाही में, पीडब्ल्यू-1 ने कहा कि जब मृतक की माँ सहोदरा देवी 03.11.2018 को सुबह 7:00 बजे मृतक को जगाने के लिए उसके

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



कमरे में गई, तो उन्होंने मृतक का शव पाया। सहोदरा देवी मामले में एक महत्वपूर्ण गवाह थीं, लेकिन अभियोजन पक्ष द्वारा उनका परीक्षण नहीं किया गया। अभियोजन पक्ष द्वारा सहोदरा देवी का गवाह के रूप में परीक्षण करने में विफलता भी एक प्रतिकूल धारणा को जन्म देती है कि यदि सहोदरा देवी का अभियोजन साक्षी के रूप में परीक्षण किया गया होता तो उन्होंने अभियोजन मामले का समर्थन नहीं किया होता।

- अभियोजन पक्ष द्वारा मृतक की हत्या के लिए अभियुक्तों पर लगाया गया मकसद यह था कि अभियुक्त, यानी विपक्षी संख्या 2 और 3 के बीच अवैध संबंध थे और विपक्षी संख्या 3 ढीले चरित्र की महिला थी। अभियोजन पक्ष उक्त दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत करने में विफल रहा। अभियोजन पक्ष द्वारा प्रतिपादित मकसद और पक्षों के बीच सूचित नोकझोंक, जिसमें विपक्षी ने राजेश के साथ कथित तौर पर अपीलार्थी और उसके बेटे को धमकी दी थी, सिद्ध नहीं हुए। विपक्षी संख्या 3 के चरित्र और संबंध के बारे में एकमात्र साक्ष्य पीडब्ल्यू-1 की गवाही है जो कि एक सुनी-सुनाई (hearsay) गवाही भी है और अस्वीकार्य थी क्योंकि अपनी गवाही में, पीडब्ल्यू-1 ने कहा था कि उसे पता चला था कि विपक्षी संख्या 2 विपक्षी संख्या 3 का प्रेमी था। किसी भी स्थिति में, उपरोक्त गवाही, अपने आप में, अपराध करने के लिए अभियोजन द्वारा अभियुक्तों पर आरोपित मकसद को स्वीकार करने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।
- विचारण न्यायालय ने शव परीक्षा करने वाले डॉक्टर की गवाही को भी खारिज कर दिया है और डॉक्टर की इस राय को स्वीकार करने से इनकार कर दिया है कि मृत्यु गला घोटने के कारण होने वाले श्वासावरोध से हुई थी। हम विचारण न्यायालय के उक्त निष्कर्षों पर कोई टिप्पणी नहीं करते हैं। यदि उपरोक्त आधार पर विचारण न्यायालय के निष्कर्षों को स्वीकार नहीं भी किया जाता है, तो भी वह अभियुक्तों को दोषी ठहराने के लिए पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि अभियुक्तों को अपराध से जोड़ने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है। मात्र यह तथ्य कि मृत्यु प्रकृति में 'होमिसाइडल' थी, अभियुक्तों को फंसाने के लिए पर्याप्त नहीं होगा और अभियुक्तों को मात्र संदेह के आधार पर दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।
- ऊपर संदर्भित साक्ष्य यह दर्शाएंगे कि अभियुक्तों को मृतक के साथ या मृतक के पास, मृतक के घर पर या मृतक के घर में प्रवेश करते या वहां से बाहर निकलते हुए अंतिम बार देखे जाने का कोई साक्ष्य नहीं है।

अभियोजन साक्ष्य में उपरोक्त कमियों ने विचारण न्यायालय को अभियोजन मामले को खारिज करने के लिए प्रेरित किया। विचारण न्यायालय का निर्णय रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्यों पर आधारित है और विचारण न्यायालय द्वारा लिया गया दृष्टिकोण एक उचित दृष्टिकोण है जिसमें किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

हमें विचारण न्यायालय द्वारा साक्ष्यों के मूल्यांकन में कोई अवैधता या विषमता नहीं मिली है। वर्तमान अपील में विचारण न्यायालय द्वारा साक्ष्यों के मूल्यांकन के संबंध में तथ्य या कानून का कोई आधार नहीं बनता है।

उपरोक्त सभी कारणों से, अपील को सरसरी तौर पर खारिज किया जाता है।

वर्तमान निर्णय की एक प्रति विचारण न्यायालय को प्रमाणित करने के बाद फाइल को रिकॉर्ड में भेज दिया जाए।

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"



(देवेन्द्र सिंह-I, न्यायमूर्ति) (सलिल कुमार राय, न्यायमूर्ति)

26 मार्च, 2026

विपाशा

Translated version. Not for Legal Use.

अस्वीकरण

"अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।"